माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 19 मार्च 2015 को चौ0 रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद में 'धारणीय (Sustainable) विकास' विषय पर आयोजित गोष्ठी में दिया गया भाषण।

मान्यवर इंद्रेश जी Guest of honour of this function, Knote स्पीकर जो हिमाचल प्रदेश के शिमला विश्वविद्यालय से यहाँ पर पधारे हैं, वहाँ के कुलपति और मेरे ही गृहप्रदेश के निवासी डा0 ए0डी.एन0 वाजपेयी जी, इस नवोदित विश्वविद्यालय के मान्यवर कुलपति मेजर जनरल डा0 रंजीत सिंह जी, Secretary to Governor of Haryana Mrs. Neelam P. Kasni ji, Seminar Director and officiating Registrar Sh. A.K. Sharma Ji, Organizing Secretary of this seminar on Sustainable Development, Prof. S.K. Sinaha ji, 'प्रदूषण मुक्त भारत एवं संसार' की National Convener Prof. Geeta Singh, मुझे बहुत प्रसन्नता है कि इस महत्वपूर्ण विषय पर जो सेमिनार आयोजित हो रहा है उसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति और प्रोफेसर भी यहाँ पर उपस्थित हैं, ऐसे सभी आमंत्रित महानुभाव, प्रशासनिक अधिकारीगण, मीडिया पर्सनज, इस संगोष्ठी में भाग लेने वाले देश–विदेश के सभी प्रतिभागी भाइयो व बहनो और विश्वविद्यालय के मेरे प्रिय छात्र एवं छात्राएँ।

यह विश्वविद्यालय जैसा कि मैने कहा कि नवोदित है, जींद जिले में इसका नया–नया उदय हुआ है। लेकिन यह बहुत तीव्र गति से आगे जा रहा है। मैं जब बैठा था तो एक पुस्तक देख रहा था। उससे पता चला कि यह विश्वविद्यालय अपने आसपास के 103 गाँवों में गया है। 103 स्कूलों में जाना, गाँवों में जाना, मैं उस मानसिकता को धन्यवाद और बधाई देना चाहता हूँ जिसके कारण आपने यह सब किया है। वहाँ के सरपंचगण यहाँ पर आए हुए हैं और वे सरपंच इस विश्वविद्यालय के परिवार के सदस्य के रूप में यहाँ उपस्थित हैं। विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों एवं छात्राओं को जानना जरूरी है कि देश के ग्रामों की क्या आवश्यकता है, उनकी कठिनाइयाँ क्या हैं, उनकी समस्याएँ क्या हैं, उनका निराकरण कैसे हो सकता है। इसका प्रशिक्षण अगर वे पढ़ते समय ही ले लेंगे तो इसके बाद जब वे कुछ बनेंगे, वे MLA, MP भी बन सकते हैं, वे कलैक्टर, DC, SP अन्य प्रशासनिक अधिकारी भी बन सकते हैं, वे व्यापारी भी बन सकते हैं, तो उस समय उनका ये जो अनुभव है गाँव का, उनका जरूर इस बात के लिए मार्गदर्शन करेगा कि गाँवों की समस्याओं का निराकरण कैसे करना है?

क्रीड़ा के क्षेत्र में, स्पोर्टस के क्षेत्र में एक स्टेडियम का शिलान्यास मैने यहाँ पर किया है। उस क्षेत्र में भी आप बहुत आगे जा रहे हैं। चार महीने पहले मैं इस विश्वविद्यालय में आया था, उस समय भी मैने एक सेमिनार का उद्घाटन किया था। विषय था– 'Multi disciplinary approach in 21st century.' विभिन्न disciplines के अंदर, विभिन्न faculties के अंदर किस तरह का coordination चाहिए और सब मिलकर विकास कैसे कर सकते हैं? इस महत्वपूर्ण विषय का वह सेमिनार था। आज भी जब मैं इस सेमिनार का उद्घाटन कर रहा हूँ तो 21वीं शताब्दी में यह एक बहुत महत्वपूर्ण

विषय है। विश्व में 21वीं शताब्दी को कहा गया है कि '21st century is the century of technology.' यह technology की century है।

सृष्टि के अंदर जो कुछ भगवान ने हमें बनाकर दिया है उसकी गहराई में हम धीरे–धीरे बहुत ज्यादा जा रहे हैं। इस technology का उपयोग development के लिए होना है, विकास के लिए होना है। इसलिए ऐसा विकास हो जो सबकी चिंता करे, जो सबका ध्यान रखे, एकांगी नहीं हो, एक को नष्ट करके दूसरा आगे नहीं बढ़े, एक की टाँग खींचकर दूसरा आगे नहीं बढ़े, It should be progressive to all. इस तरह का development होना बहुत जरूरी है। इसलिए इस विषय को लेकर दूसरा महत्वपूर्ण सेमिनार यह युनिवर्सिटी यहाँ पर कर रही है।

विश्वविद्यालय की इतनी सारी गतिविधियाँ के बारे में सोचता हूँ तो कई बार मेरे मन में आता है कि विद्यार्थियों को पढ़ा भी रहे हैं कि नहीं पढ़ा रहे? सबको इसी में लगाए हुए हैं? क्योंकि विश्वविद्यालय का तो प्रमुख रूप से काम परीक्षाएँ लेना है, आपको subjects की जानकारी देना है, आप उसमें पारंगत हों उसके लिए प्रयास करना है। माता–पिता ने भी आपको इसीलिए यहाँ पर भेजा है। इसलिए कई बार सोचता हूँ कि ऐसा तो नहीं है कि आप वह न कर रहे हों और यह सब ही कर रहे हों? लेकिन ऐसा नहीं है। ये co-curricular activities हैं। ये आपके पाठ्यक्रम के अतिरिक्त हैं।

मुझे ऐसा लगता है कि इस तरह के प्रयास का श्रेय खासकर हमारे कुलपति को जाता है। ये उम्र के हिसाब से तो ओल्डमैन हैं लेकिन जब ये चलते हैं तो भी मुझे जवान दिखते हैं और बोलते हैं, भाषण देते हैं तब भी जवान दिखते हैं। इसलिए मेरी बहुत–बहुत शुभकामनाएँ हैं। आप ठीक दिशा में जा रहे हैं और अगर ठीक दिशा में गए तो इस जिले की दशा भी आप जरूर ठीक करेंगे। इस जिले की दुर्दशा नहीं होने देंगे। सरकार ने अभी आपको 10 करोड़ रूपये दिए हैं। फंड की चिंता मत करो यह सरकार बहुत उदार है और जरूरत पड़ेगी तो गवर्नर आपके साथ है।

यहां sustainable development के ऊपर माननीय इंद्रेश जी का जो उद्‌बोधन हुआ है। आप तीन दिन सेमिनार चलाने वाले हैं, चार विशेष सत्रों में आप चर्चा करने वाले हैं। लेकिन मुझे लगता है वे जो चार आपके सत्र होने वाले हैं, तीन दिन तक आप विचार करने वाले हैं, वे अगर पूरी तरह से सफल नहीं हों तो भी इनके अकेले के भाषण ने आपके सेमिनार को सफल कर दिया है। इसमें वे बातें थीं जिनसे आपकी पर्सनल्टी sustainable बनेगी। Development तो छोड़ दीजिए। पहले आप अपने विचार को sustainable बनाइए। आप अपने व्यवहार को sustainable बनाइए।

आप जो हथियारों की बात करते हैं, हथियारों का दोष नहीं है। हथियार जिसके हाथ में हैं उसका दोष है। आप क्या सोचते हैं? एटम बम का उपयोग रक्षा के लिए भी हो सकता है। 21वीं शताब्दी जैसा मैने कहा कि की टैक्नोलोजी की शताब्दी है। यह शताब्दी विकास की भी है। भारत से पूरे विश्व को सबसे ज्यादा अपेक्षाएँ हैं। विकास अक्सर भौतिक होता है जो आपको दिखता है। लेकिन इस भौतिक विकास का महत्व

नहीं है। यह विकास करने वाला और विकास का उपभोग करने वाला आदमी है। यह आदमी बड़ा महान है, इस आदमी की sustainability चाहिए। साचिए जो रावण की लंका थी उसका विकास नहीं हुआ था? आप किस विकास की कल्पना करते हैं? भौतिक जो विकास है ? रावण की लंका विकास नहीं था? आपके पास तो अगर 100 तौला सोना आ जाए तो आप किसी से बात नहीं करते। आपके मन में हमेशा इस बात का अंहकार रहता है कि मेरे पास इतना सोना है।

एक गाँव में एक व्यक्ति था वह किसी से बात ही नहीं करता था। कोई नमस्ते करे तो नमस्ते का जवाब ही नहीं देता था। लोगों को आश्चर्य हुआ कि बात क्या है, यह नमस्ते का जवाब क्यों नहीं देता है, यह बात क्यों नहीं करता। एक बार लोगों ने घेरकर उससे जबरदस्ती पूछा कि बता तू जवाब क्यों नहीं देता, हम यह आज पूछकर रहेंगे। अब वह घिर गया तो उसने कहा कि चलो मेरे साथ और सबको घर ले गया। घर ले जाकर उसने अपने कमरे का दरवाजा खोलकर दिखाया। अंदर देखा तो सोना ही सोना। सोना चमक रहा था। उसने कहा कि देखो इतना सोना है हमारे पास। तुम्हारे पास किसी के पास है? जिसके पास इतना सोना है वह किसी से नमस्ते क्यों करेगा?

लेकिन लंका के पास कितना सोना था? वहाँ तो मकान सोने के थे। लेकिन लंका के विकास को आप विकास कहेंगे? उस लंका को हनुमान जी ने जाकर जला दिया, धूल–धूसरित कर दिया क्योंकि वह विकास नहीं था, वह विनाश था। विकास तो विभीषण की कुटिया में था। वह लंका का विकास माँ सीता के हरण के लिए था, माँ सीता को संरक्षण देने के लिए नहीं था। इसलिए विकास की कल्पना क्या है? How will you define development? What is positive development?

अब मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। हम सब यहाँ पर बैठे हुए हैं। यह प्रोग्राम चल रहा है। इसको sustainable प्रोगाम कैसे कहेंगे आप? कुछ लोग आ रहे हैं, कुछ लोग जा रहे हैं। मान लो आप सब लोग मेरे भाषण के बीच में उठकर चले जाएँ तो sustainable प्रोग्राम होगा? आप बीच में ही उठकर तालियाँ बजाने लगें, एक–दूसरे से बात करने लगें। वैसे तो प्रोग्राम में बहुत बड़ी संख्या में लोग आते–जाते रहे हैं। यह आना–जाना इस sustainable प्रोग्राम का लक्षण नहीं है। अच्छे सीरियस प्रोग्राम में तो लोगों का मोबाइल बंद करा देते हैं, कि मोबाइल बंद कर दीजिए। क्यों बंद कर दें मोबाइल? क्योंकि आप प्रोग्राम में आए हैं। आप जरा उसको सुनिए, आप तल्लीन होकर उस विचार को सुनिए, उस पर गौर करिए और नहीं सुनना तो मत आइए। चेहरा दिखाने के लिए आए हैं क्या ?

इसलिए जो यह छोटा सा प्रोग्राम है जिसमें आप बैठे हुए हैं उसके बारे में ही विचार करो। यह sustainable प्रोग्राम कब कहलाएगा? तब कहलाएगा जब आप इसमें आएँगे, दत्तचित्त होकर इसे सुनेंगे, बीच में गड़बड़ नहीं करेंगे, बीच में नहीं उठेंगे, बीच में बातचीत नहीं करेंगे, मोबाइल नहीं सुनेंगे। कुछ लोग तो मोबाइल पर मैसेज ही पढ़ रहे हैं। आप मैसेज तो बाद में भी पढ़ सकते हैं। इसलिए यह जो प्रोग्राम है इसके बारे में

विचार करो। यह ठीक है कि मैं बोल रहा हूँ इसलिए अब आप नहीं उठेंगे। लेकिन इससे पहले तो उठ रहे थे न, जा रहे थे न? तो कैसे कहेंगे कि यह sustainable प्रोग्राम है। इसलिए sustainable शब्द, यह शब्द इतना महत्वपूर्ण है कि यह सबकी चिंता करता है। It is all inclusive. यह sustainability नाम की चीज भारत की देन है।

आपने logo में जिस स्वामी विवेकानंद जी को आदर्श माना है। जरा स्वामी विवेकानंद जी की 1893 की अमेरिका में शिकागो वाली घटना को याद कीजिए। 1893 में अमेरिका में जाकर विश्व धर्म सम्मेलन में, जहाँ पर वे अधिकृत नहीं थे कैसे भी कोशिश करके वहाँ पहुँचे। क्योंकि वहाँ बहुत बड़ा अनर्थ होने वाला था। ईसाई संप्रदाय वाले यह सिद्ध करने चले थे कि पूरे विश्व में जितने भी रिलीजन हैं, जितने संप्रदाय हैं, जितनी उपासना पद्धतियाँ हैं, उनमें सबसे श्रेष्ठ क्रिस्चनिटी है। यह बहुत बड़ा अनर्थ होने वाला था। तो वह जो बहुत बड़ा अनर्थ होने वाला था शिकागो के अंदर कि क्रिस्चनिटी रिलीजन सबसे श्रेष्ठ है। यह जो सिद्ध करने का प्रयास था आप इसको sustainable कहेंगे? Was that a sustainable program? वह sustainable प्रोग्राम नहीं था। Sustainability वाली बात तो स्वामी विवेकानंद जी ने वहाँ जाकर कही कि पूरे विश्व में जितने भी रिलीजन हैं, जितनी उपासना पद्धतियाँ हैं, जितने पंथ हैं, ये सबके सब बराबर हैं, All are equal. आप अपनी रूचि और प्रकृति के अनुसार किसी भी रास्ते को अपना सकते हो। किसी भी रास्ते को अगर ईमानदारी और भक्ति से अपनाओगे तो आप वहीं पहुँचोगे जहाँ आपको पहुँचना है। जिसको इन्द्रेश जी ऊपर वाला कह रहे थे आप सब वहीं पहुँचोगे। All religions are equal. अमेरिका के लोग जो यह सिद्ध करने चले हैं कि क्रिस्चनिटी सबसे श्रेष्ठ सभ्यता है वे सब कुएँ के मेंढक हैं। They all are कूप मंडुक. They don't know the length and breadth of ocean. वे समुद्र की ऊँचाई, लम्बाई, चौड़ाई और गहराई को नहीं जानते। स्वामी विवेकानंद जी ने डंके की चोट पर कहा था कि Hinduism is a vast ocean. Christianity is only eco of that. स्वामी विवेकानंद जी के उस कार्यक्रम को याद करो वह sustainable thought था, वह sustainable development था।

आप जरा अपने स्वयं के बारे में विचार करिए। आपके शरीर के ऊपर से लेकर नीचे तक कितने अंग हैं? इन सबका अगर समुचित विकास नहीं हुआ है तो आपके शरीर को हम sustainable कहेंगे? आपके शरीर का सर्वांगीण विकास हुआ है ऐसा कहेंगे? एक पैर पतला है और दूसरा बहुत मोटा है तो आपको क्या कहेंगे? हम आपको स्वस्थ आदमी नहीं बीमार आदमी कहेंगे। और कहेंगे जाकर इलाज कराओ।

वैसे ही एक परिवार के अंदर जितने सदस्य हैं वे सारे के सारे सदस्य अगर सुखी नहीं हैं, वे अमन चैन से नहीं हैं, किसी की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं, किसी की आवश्यकताएँ पूरी नहीं होती हैं तो ऐसे परिवार के वातावरण को आप sustainable कहेंगे? वह sustainable नहीं है। जिस परिवार के अंदर लड़का और लड़की तो हैं, लड़का और बहू तो हैं, कमाते भी बहुत अच्छा हैं, पढ़े–लिखे भी हैं, पिता जी ने उनके

लिए सब कुछ कुर्बान किया है। लेकिन उनके बड़े होने के बाद पिता को अगर वृद्धाश्रम में रहना पड़ता है तो आप उस परिवार को क्या कहेंगे? वह परिवार sustainable है? इसलिए आप समझ सकते हैं कि यह जो sustainability है यह 21वीं शताब्दी की कितनी बड़ी आवश्यकता है।

इसी बात को ध्यान में रखकर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी अमेरिका में Medison Square Garden में हजारों की भीड़ में क्या कहा था? जिस अमेरिका में 1893 में स्वामी विवेकानंद जी गए थे, उनका भी नाम नरेंद्र था। मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में जो भाषण दिया उसमें क्या कहा था कि आप पूरे विश्व को sustainable बनाना चाहते हो, पूरे विश्व को शान्ति और अमन का सेंटर बनाना चाहते हो तो उसका एक ही तरीका है, वह है योग। आप योग को अपनाइए।

मुझे लगता है कि योग को अपनाने के बाद कोई भी व्यक्तित्व जैसा चाहिए वैसा बनता है। आज मैं एक अखबार में पढ़ रहा था कि उस योग की बात को पूरे विश्व ने स्वीकार किया। विश्व के 193 देशों में से 177 देशों ने उसका समर्थन किया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने उस समर्थन को, उस प्रस्ताव को मानकर 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित कर दिया। आज मैं एक अखबार में पढ़ रहा था कि जब अगला 21 जून आएगा, अब मार्च है, जब 21 जून आएगा तो अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारी, योग दिवस का जश्न सबसे पहले भारतवर्ष जाकर चीन में मनाएगा। चीन में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का जलसा होगा जिसमें हजारों की संख्या में योग विशेषज्ञ आएंगे और भारत उसका आयोजक होगा।

इसलिए ए0डी0एन0 वाजपेयी ठीक कह रहे थे Originity. आप originally क्या हैं जरा इसका विचार करो। Creativity. आपका मन creative होना चाहिए, रचनात्मक होना चाहिए, विध्वंसात्मक नहीं होना चाहिए। जब आप Originity अपनाएंगे, Creativity मन में आएगी, तब sustainability आएगी। Originity, Creativity and sustainability ये आपकी personality के अंग हैं। इन सबका कोई अगर जन्मदाता है तो वह है spirituality. So remember these four things- Originity, Creativity, sustainability and after that spirituality.

आप लोग जो लौकी खाते हैं, जिसे हरियाणा में घीया कहते हैं, आपने सुना होगा कि इसका जो ओरिजनल रूप होता है उसे मोटा करने के लिए उसे इंजैक्शन लगा देते हैं और घीया मोटी हो जाती है। गाय और भैंस से ज्यादा दूध मिले इसलिए उसे इंजैक्शन लगाते हैं। आप खेती के अंदर क्या कर रहे हैं ? इस सृष्टि की रचना में खेती भगवान ने आपको पेट भरने के लिए दी है, अन्न पैदा करने के लिए दी है। अधिक से अधिक अन्न पैदा करने के लिए आप खेती के साथ कितना अन्याय कर रहे हैं? आप कैसे–कैसे फर्टिलाइजर और खाद का उपभोग कर रहे हैं जिसके कारण खेती बंजर हो रही है। आप क्या कर रहे हैं जिसके कारण धरती में पानी का स्तर नीचे जा रहा है, पानी की कमी हो रही है। आप इतना ज्यादा कार्बन डाई ऑक्साइड पैदा कर रहे हैं कि

जो सृष्टि का temperature है वह बढ़ता चला जा रहा है। Climate change हो रहा है। पर्वतों पर बर्फ पिघल रही है। इसलिए कई बार भविष्यवाणी होती है कि 2050 के आते–आते सृष्टि प्रलय हो जाएगी। यह प्रलय आप ही कर रहे हैं। भगवान ने आपको सब कुछ बनाकर दिया है। आप उसका शोषण कर रहे हैं, आप उसका दुरूपयोग कर रहे हैं। आप sustainable नहीं हैं। इसलिए आज इसकी कितनी आवश्यकता है।

मैंने पंजाब यूनिवर्सिटी में एक सम्मेलन में एक उदाहरण दिया था। तब मैने एक उदाहरण दिया था कि एक ऐसा आदमी था जिसे यह वरदान मिल गया, जिसे यह ताकत मिल गई कि इस आदमी की एक खून की बूँद अगर किसी ऐसे रोगी को जिसका रोग जाता ही नहीं है, कोई ऐसा रोग है जो ठीक होता ही नहीं है, लेकिन उस आदमी के खून की एक बूँद उसे मिल जाए, उसके शरीर में चली जाए तो उस आदमी का रोग ठीक हो जाता है। अब यह धीरे–धीरे प्रचार हो गया। और जब यह पता चल जाए कि एक आदमी है उसके खून की एक बूँद व्यक्ति के रोग को ठीक कर सकती है तो आप क्या करेंगे ? जितने भी रोगी थे सब लाइन लगाकर खड़े हो गए कि एक खून की बूँद चाहिए, एक खून की बूँद चाहिए।

जब तक थी तब तक वह खून की एक बूँद देता रहा। लेकिन शरीर के अंदर खून कितना है? देते–देते उस आदमी की यह हालत हो गई कि वह मरने को आ गया और जब मरने को आ गया तो लाईन में लगे रोगी कहते हैं कि जल्दी करो एक खून की बूँद दे दो, अगर वह मर गया तो हमारा क्या होगा? आपको अपने रोग की चिंता है, उसकी नहीं जो मरे जा रहा है। आप इस unsustainablity से कहीं ऐसा ही तो नहीं कर रहे? आप खेती के साथ, भगवान ने सृष्टि में जो चीजें प्रदत की हैं उनके साथ यही अन्याय तो नहीं कर रहे? अपने सुख के लिए आप उसका दुरूपयोग तो नहीं कर रहे? यह दुरूपयोग अगर आप नहीं रोकेंगे तो आपका development भी जाएगा और आप खुद भी जाएँगे। आप पृथ्वी को नहीं बचा पाएँगे। पृथ्वी संकट में है। हवा प्रदूषित हो रही है।

इसलिए विश्वविद्यालय कितना अच्छा कार्यक्रम लेकर चला है। स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, प्रदुषण मुक्त भारत, हिंसामुक्त भारत। ये नारे लेकर आपका विश्वविद्यालय चला है। आप गाँव में जा रहे हैं। यह गाँव की ही नहीं पूरे विश्व की आवश्यकता है। ये सब आप प्राप्त करना चाहते हो तो प्रदूषण मुक्त, स्वस्थ, स्वच्छ, हिंसामुक्त भारत के लिए आध्यात्मिक भारत चाहिए। आध्यात्मिक भारत। आध्यात्मिकता के लिए पहचान पूरे विश्व में सिर्फ भारत की है जो आध्यात्मिकता को पहचानता है और आध्यात्मिकता का संदेश पूरे विश्व को देता है। यह sustainability भी उसी में से पैदा होती है। इसलिए इस समन्वित और संतुलित सोच का विचार करके आप तीन दिन सेमिनार में इन सब बातों पर विचार करिए। 21वीं शताब्दी में जो सबसे बड़ा रोग है, जिससे विश्व परेशान है उसके लिए एक अच्छा निष्कर्ष निकालकर पूरे विश्व को और देश को एक नई दिशा देने की कोशिश करिए। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आज इस सेमिनार का उद्घाटन करता हूँ।

जयहिन्द!